नारद आइ छंडाय। भयौ प्रहलाद पुत्र तस॥
तिहि जननी संग्रहन। सुने उर मद्धि रष्षि गस॥
मघवान सहित दिगपाल दस। मात वयर कज भंजि जिम॥
सुरतान कहत चहुआन भर। हौं पनि गजहु अब्ब इम॥ छं०॥ ५७॥
थान थानं फुरमान। फट्टि बंधन हिंदू दिय॥
विधिना सो निम्मयौ। मेटि संकै न दियौ दिय॥
इला नाम धरि हियं। मेछ षुरसानह जोरिय॥
ज्यों बराम उच्चरै। सेन वीरन गढ़ तोरिय॥
हक हलाल बोलै न मुष। काफर एधर बर भई॥
दह बड़े हूर हम साहि कर। तो सलाम कर सुभ्भई॥ छं०॥ ५८॥

तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना।

दिष ततार दह करि। सलाम उच्चार वरज्जिय॥
रहि न बोल ज्यों साहि। दिया उच्चार जु हक्किय॥
षां ततार वरजे निसान। आसन उर पानं॥
जु कछु मत्त मत्तियै। हुकम दीना सुरतानं॥
मक्का मुकाम पीरान की। करिव आन बल बंधियै॥
मादरं पिदर मानें न दर। निमक हलाल न संधियै॥ छं०॥ ५९॥

दूहा॥ थान थान फुरमान फटि। बंधन हिंदु नरिंद॥
दै दुबाह सों निम्मयौ। को कहै कविचंद॥ छं०॥ ६०॥
कोक कहै विधिना लिषी। आज साह दल तेज॥
मानों सात समुंद ने। तज्जि मजाद अमेज॥ छं०॥ ६१॥
मरजादा सत्तों समुद। अमित उलंघी आज॥
मानों घन के देव दुति। नाग विरोधन पाज॥ छं०॥ ६२॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान।

कवित्त॥ नाग भूमि सिर तजै। चंद छंडै सुचंद कल॥
कलिन भान उग्गई। पथ्थ मुकै सु वान छल॥

रघु सुग्यान छंडई । भीम छंडै बल बंधै ॥
रूप छंडि मारंद । कंद छंडै हर संधै ॥
मुक्कै ज़ु जोग जोगिंद जु । करैं फिरस्त छंडै गुनह ॥
इत्तने धीर छंडै जदपि । साहि न कस मुक्कै मनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुक्कै सुक्कै सुहत । हत गोरी सुरतान ॥
सकल सेन सज्जे न्रपति । सुनहुं तौ. कहू प्रमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन ।

सुन्निय मीर मीरन चवै । देषि सष्पिरह मीर ॥
जितौ कस्स सुरतान कौ । तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पद्धरी ॥ देष्यो न जाइ आलम अदब्ब । थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब ॥
कर जोरि जोरि सब रहें ठट्ठ । उच्चरै सेन बोलंत गट्ट ॥
छं० ॥ ६६ ॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल । बोलै न मुष्ष सनमुष्ष काल ॥
सुरतानं निजरि बर भई तास । दह बेर हूर बर करि सलाम ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अंगुरी टेकि इल पां लार । दह करि सलाम बोलयति बार ॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ । उच्चरौं मंत सोजीव हेउ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना ।

दूहा ॥ चौसठि वेर सुहत्त बर । फेरि फेरि सुरतान ॥
सो पहराए मत्त गुर । दै किताब परिमान ॥ छं० ॥ ६९ ॥
दै किताब पहिराइ चर । नर नरपति मन साहि ॥
आसी पुर जो भंजई । इहै तत्त गुन आहि ॥ छं० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीम का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करनें की तरकीब पूछना ।

सुन्यौ मंच मंची सुमत । कहत मंच सुरतान ॥

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ पति फ्रमान हक्करिय। करिय अंगम सु सत्त गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। कोश चंपै सु काल मन ॥
अरि निद्दुर साहरी। सबल मंची इष्षन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सत्ति मसूरति बोलि बर ॥
तत्तार षान षुरसान पति। करों मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज बर ॥
चपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान तत्त नर ॥
बेरं कोबिद अछरि। काम अच्छपतिय स सुंदरि ॥
इत्ते न्रपति जो होइ। भए न्रप तौर समुंदरि ॥
तिहि कहे षान तत्तार बर। आसीपुर भंजन बलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ला धरा। बैर वत्त बुझ्झै षलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ षां ततार जंपै सुबर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें बनें हम्मान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार बच। हिंदवान लै जाइ ॥
मात रौस बेगम म्लिटै। सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर वेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करै सुदिहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

तत्तार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

जवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ रौमुष्ह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मौर। सज्जि चतुरंग सेन बर ॥
मौर बँदा षुरसान। मुक्कि रद्दै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि बर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मंति मंत बंधै न्रपति। किंत्ति बोलि [1]भर नर पढ़ै॥ छं०॥७७॥

हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मनसूबा पक्का होना।

षां हुसैन आवत्त मन। सुमति कियौ परिमान॥
आसी पुर भंजन भरै। इह करि मंत निधान॥ छं०॥ ७८॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा।

कवित्त॥ रे अमंत तत्तार। मतौ जानैं न प्रमानं॥
ए हिंदू हम बंधि। सीस लग्गै असंमानं॥
हमं दल भज्जत देषि। तुम्म गिनियै तिन मानं॥
अब हम बंचि कुरान। फतेनामा धरि पानं॥
पाषंड सस्त्र अग्गैं छिपै। मिं भंजौं दुज्जन अरी॥
चहुआन सेन हांसीपुरह। लुट्टि गाम उभ्भा भरी॥ छं०॥ ७९॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा।

हांसीपुर पुर विपुर। करौं सु विहान तेज बर॥
तो गज्जानिय सुद्ध। हांसि मंडौ जु अप्प धर॥
अरि भंजे तन भंजि। मार मारह करि मोरौं॥
जौ बंधों सामंत। साहिं तसलीम सु जोरौं॥
ता दिवस षान तत्तार कौं। धार धार चढ़ि उत्तरौं॥
सुविहान आन चहुआन सों। जौन जुद्ध इत्तौ करौं॥ छं०॥ ८०॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना।

दूहा॥ पाहारी बल्लोच तहँ। करि सलाम सुरतान॥
हम बंदे हजुर निंजरि। दै हांसीपुर थान॥ छं०॥ ८१॥
कवित्त॥ सत्त बेर पुंहरी। तंग बंधी जु अप्प कर॥
सब बद्धौं सामंत। बौंटि षुरसान देउ धर॥
बान साहि साहाब। बीय सन मज्जिय अप्पिय॥
षां षुरसान ततार। षान विय सरद सु धप्पिय॥

चतुरंग अनौं हिंदू दिसा। बर गोरी सज्जिय सुबर ॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं० ॥ ८२॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा ॥ सिंधु मुक्कि गंए दूत बर। तजि गोरी सुरतान ॥
कै बिधि पर्वत चंपई। अवनी उजमी भान॥ छं० ॥ ८३॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे। षान षुरसान ततारी ॥
हसम हयग्गय सूर। दुसह दुज्जन मक्कारी ॥
दल बद्दल सु विहान। सूर पच्छिम दिसि उट्ठे ॥
लज संका गल बंधि। सिंघ भद्द नद्द सु छट्टे ॥
दिसि दुरंग अभंग हांसीपुरहं। सजिय सेन संमुह धवै ॥
धर दहन वीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै॥ छं० ॥ ८४॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

त्रोटक ॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। द्रिग्गपाल चमक्कि निसान धुनी ॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै। मनु भांवरि भान सुमेर लसै ॥
छं० ॥ ८५॥

दिसि रत्त रयत्त उठंत बरं। मनौं बद्दर भद्दव के दुसरं ॥
गुर गोरिय साहि सु रंधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी ॥
छं० ॥ ८६॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनं जमकें जमजोति जिसा ॥
पल की पल संकर अंदनता। सुमनौं सुर दादर के जमिता ॥
छं० ॥ ८७॥

रत रत्त मयूष इला चमकै। मनु इंदवधू नभ तें दमकै ॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। चढ़ि आज अवाज सुराज रसं ॥
छं० ॥ ८८॥

जिनके गुन वीर सुमंत चवै। तिनके बल देवन तत्त भ्रमै ॥
जमसे दरसे जंम ते गरुअं। सुरतान तिपास रहे धुरयं ॥छं०॥८९॥
षुरसानय षांनति अग्ग अनी। तिमझि बर पासन राज यनी ॥
ढलकें ढल ढाल ढलक्कि लता। तिर साइर काइरं तं कलिता ॥
छं० ॥ ९० ॥
अब कै न्रप गोरिय साहि बरं। सुमनीं घन भूमि उतार उरं ॥
बढ़ि चल्लिय उग्गि कला दुसरी। न्रिप राज नरिंद सु जुद्ध हरी ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सब सेन गरिष्ट इतौ बलयं। न्रप राजन राजन सो कलयं ॥
रन मुच्छ उठ्ठें वर कंक लसी। दिसि बंक विराजत पच्छ ससी॥
छं० ॥ ९२ ॥
इतने गुन चार चरंत करं। उतरे जमरोज नरिंद भरं ॥
जम रोज तजै ग्रह सिंह बरं। चहुआन सुनी रन राज उरं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना।

कवित्त ॥ कूंच कूंच्च उप्परे। राज अग्या नन मानै ॥
सुबर जूह सुरतान। सैन चावद्दिसि बानै ॥
उगन हार ज्यों प्रात। खिन ढग्यौ बर गोरी ॥
तिमरलिंग जुल्लिकन्न। राज रजकन्न सु ओरी ॥
धंनि धंनि धंनि गोरी सु बर। बलभग्गा भग्गौ न बल ॥
आसीस भंजि ढिल्ली पुरां। नब लग्गों मेवात षल ॥ छं० ॥ ९४ ॥
दूहा ॥ आनि सकल गोरी सुबर। गरुअ मंत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्थ सु हत्त पति। पत्ति नां लभ्यौ पार ॥ छं० ॥ ९५ ॥
षां तत्तार सुरतान बर। नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आंसी हुतें। आंय सपत्ते थान ॥ छं० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आंसीपुर के पास पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ आय सपत्ते थान। बीर आसी गिरद्द करि ॥
सरद काल ससि मित्त। परीं पारस सुमंत धर ॥

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कम धारिय ॥
चावद्दिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रुक्कि सज्यौ साहरौ बैलौ। सेन सजत लग्गी घरी।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूली सुरी॥ छं०॥ ६७॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चल्यौ षान तत्तार। सौर हक्के द्रिगपालं॥
घुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद्द। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों असाढ़ रति भान। धुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयल्ल कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यों पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥६८॥

मुसलमानी जातियों का वर्णन।

षां षुरसान ततार। बीय तत्तार पंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इल्चि षूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बौर भट्टी मैदानी॥
चौगत्ता चि मनीर। पीरजादा लोहानी॥
अनेक जात जानैति कुल। विरह नेज असि ग्रहि करद॥
तुरकाम बीच बलोच बर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं०॥ ६९॥

दूहा॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार षुरसान॥
वे रज गुर सम्हे सजिग। मचिग जुद्ध विरुझान॥ छं०॥ १००॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार रुस्तम्म। वाम दष्षिन ग्रष पंषी॥
षां निसुरत्ति पक्कर। उभै सेना पग लष्षी॥
षान षान षुरसान। चंच चल्लु रष्षि कसानी॥
कंगुरेस गष्षरह। जंघ मंडे दल भानी॥
षिलची षुरेस भट्टी विहर। पंछ सु द्रुन पच्छह सुबर॥
महनंग अंग मारूफ षां। छच सीस धारिय सुभर॥ छं०॥ १०१॥

युद्ध वर्णन ।

हनूफाल ॥ परिधाय स्हूर प्रकार । पांवार वज्र सु भार ॥
कढ़ि.बोलि षग्ग विहथ्थ । भारथ्थ ज्यौं सुनि पथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षग षग्गन वाहै पंति । मनों बाज सेन कि पंति ॥
भारथ्थ कथ्थ जोति । असि अंग बिद्धि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बजि गुरजं बीर प्रहार । सँग.देहि चौसठि तार ॥
दुहूं पास अंत ररंत । गिध गिधी गिद्ध गहंत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
तर बेलि चढ़ि स्रनाल । मनु गहिय संस सिवाल ॥
तुटि मुंड तुंड सुभट्ट । मनु भग्गरं रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
रुधि छच्छ धर बर रुंड । पावक्क झर उठि कुंड ॥
कहि लेहु लेहु सु स्हूर । भारथ्थ बित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
षग झूर उट्ठिक बार । झर गिद्धि सो पति पार ॥
परिरंभ रंभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
मुक्कि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पियन दष्षिन आइ ॥
मिस हारि रंभ स अग्गि । इन सब मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
किं अगनि दंभझै ताइ । तन धार धार सुलाइ ॥
बर बीर रोस सुगत्ति । जहां सोष इष्षि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दल सुभर अल्हन मभ्भिझ । जुरिभोम कीन्ह अलु भिझ ॥
उच्छरि अरी अरि भीर । चानूर मुष्टक बीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
घरि पंच भिरि भारथ्थ । दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बढ़ कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित्त ॥ सुबर स्हूर सामंत । बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
नंषि कोट दढ़ ओट । कोठ किप्पाट ढहाए ॥
सत छुट्यौ सामंत । ग्राम बुल्यौ रघुवंसी ॥
रे अभंग सामंत । सीहि बंधौं बल गंसी ॥
विना न्रपति जो बंध । कित्ति चावद्दिसि चर्ल्लै ॥
सार भार तन षंडि । बीर भारथ्थ न डुल्लै ॥

नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गरुअ ग्रब्ब षंडोति षग ॥
उब्बरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि रॉव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। षग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेज भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर मारू मरङ। सरद तेज ससि मुष षुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां धर डुल्यौ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना॥

भिरिग हूर सामंत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
सघन घाइ आवत्त। मेर तत्तार होइ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत ढुल्यौ न दीन दुहु ॥
उतरि मेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
बहु षग्ग सूर सामंत रन। भोरी षान षुरेस परि ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्ठे विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥
समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन विच्छुरहि। रुद्र भूमिअ सु बीर बहि ॥
निसचर वीर उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद जद नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निस्स बर मुद्दरी। बर हर हर बज्जे रुसुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। मुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह लोहान महा भर। रा बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

---

(१) ए.-मन। (२) ए.-विछुर नाहीं। (३) ए. उभारी।

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ बर पीचौ अचलेस । गरुअ गोबिंद महनसौं ॥
उद्दिगं बाह पग्गर । नरा नरसिंघ समरसौ ॥
उभै बंध मोरीय । राव रानिंग गिरेसं ॥
देव कन्न साघुलौ । जुद्ध पारथ्थ बिसेसं ॥
मलषान भीम पुंडीर भर । जैत पवांर सु वग्गरी ॥
चामंड राइ कनक सुभर । रघुबंसी सिर पग्घरी ॥छं०॥११७॥

दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात घाइ घरियार ॥
रोस लगे हिंदू तुरक । मनुं बज्जैं कठतार ॥ छं० ॥ ११८ ॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना ।

भुजंगप्रयात ॥ असी अस्सि सस्त्रं बधी षान बज्जं ।
सु षग्गं षिती पान सो बीर चज्जं ॥
चवै चक्कि च्यारं सबै रंग बीरं ।
तजी गाभ बारं चढ़ी धार धीरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
अए अस्स कुस्सं उपंमी प्रमानं ॥
मनो षेत षड्डै किसानं रिसानं ॥
मिलें सूर धारं दलं मेल सानं ॥
पुरी जानि बुंदं समुद्रे न पानं ॥ छं० ॥ १२० ॥
तजे कोट षानं सबै सूर घेरी ॥
मनों भाव रंभान सुम्मेर फेरी ॥
परें षग्ग जट्टें उजत्तीत झारी ॥
मनों देवलं बज्जि कल्ल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥
घयं भेदि घायं अघायंत रस्सी ॥
निकस्सी परी अद्ध सा सूर कासी ॥
कटे बंध काबंध सो बधं पारी ॥

मनो बह्नि विभ्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भज्जि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों वामना रूप भै भौम भारी ॥
रुधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥
तिनंकी उपंम्मा कबीचंद्र धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी।
जलं जावकं सोभ पन्नार पारी ॥
हयं छिंछ उट्ठौ रुधी छिंछ तारी।
हथं वक्र जरद्द दुअद्द पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥
तिनंकी उपम्मा कबी तें कहाई।
जलं जावकं पावकं को बुडाई ॥
ग्रही केस उड्डे उतंमंग पष्षी।
तिनंकी उपम्मा कबीचंद अष्षी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं।
चली नभ्भ तें चंदनं सुक्कि धारं ॥
भगी घायन भूमि भा प्रान पारं।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
बजी घाय अघ्घाइनं ग्रीव फानं।
फिरें केत रक्की जलं मभ्भि सानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बैं दलं रुद्धि अस्सी।
मनो दीपतौ हिंदुनं हद्द कस्सी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
घटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बस्सी।
फिरी फौज तत्तार की घाइ गस्सी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या।

कवित्त ॥ अद्ध सेन अध परिग। परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग। पयह कों गनै असेकं ॥
दसत दून बानेत। घाय झोरी करि लिन्ने ॥
पंच पेंड़ पंचारु। सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

पछ पुंछ षान आलील तब। अति आतुर असिवर षरिय ॥
भग्गौ न मीरं मो भीर सुनि। अब भंजो हिंदू रंरय ॥ छं० ॥ १२९॥

अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना।

सुनि सामंत निसान। षान अलील उभं नरि ॥
मनंहु अग्गि घन वृत्त। आय डंडूर सुमंधरि ॥
हुंगोरी धर कोट। राज 'अट्ठो नरुआनी' ॥
मो उभ्भै कुन सूर। भोमि विलसै सुरतानी ॥
इहु कहिरु सेन अग्गें धरिय। जाय सूर मुष षग्गयौ ॥
तिन सार मार सामंत दल। पंच डोरि पच्छो गल्यौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना।

दूहा ॥ तमंकि सूर सामंत तब। झुकि लग्गे फिरि षंग ॥
लपट झपट ऐसी बहै। ज्यों 'जज्जर बन अग्गि ॥ छं० ॥ १३ ॥

लड़ाई का वाक्‌चित्र वर्णन।

विराज ॥ छुटे अग्गिबाजं, मनों नभ्भ गाजं। चढ़े सूर सूरं, नमे रंक नूरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

बहै बान भारी, मनों टिड्डु चारी। दुती सोभ आनं, कबीका बषानं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

दिसायं न्रमल्लं, मनो नाग हल्लं। परैं वष्प घायं, मनों वज्र लायं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

करै कूह कैकं, हुअं एकमेकं। वहै षग्ग धारं, अभूतं सरारी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

होवै षंड षंडं, धरं रुंड मुंडं। बकैं मार मारं, मनों प्रेत चारं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जुटै सूर हथ्थं, मनों मल्ल बथ्थं। परै भूमि सारं, मनों मत्तवारं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) को.-कृ.-अड्डी। (२) ए.-वुज्जर।

अए फन्द षेतं, बँधे बंध नैंतं। छुटी अंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥
षगे मग्ग चाहं, अरी पेंषि दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट जानं॥
छं० ॥ १३९ ॥
रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। लोहानों अजानं, दुढ़े षान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥
वहै संग भारी, निकस्से कटारी। तिनं घाव सद्दं, करै कुंभ नद्दं॥
छं० ॥ १४१ ॥
जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥
दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं। पऱ्यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥
भगे साहि ठट्टं, गए दस्स वट्टं। भद्री पिक्ति ताजं, दियं जित्ति बाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भइय जित्ति साँमंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसॅल। पिक्ति पृथ्वी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज़ प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि वर गानं॥
जै जयम सद्द आयास हुअ। घाव सूर झोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५१ ॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयग्गय लुट्टि । लुट्टि पष्षर रषतानं ॥
तत्तारी षुरसान । हाम भग्गौ सुरतानं ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्यं ॥
पुच्छि षबरि बर दूत । कहिय भारथ बत कथ्यं ॥
रगतैत नेन साहाब सजि । पैगंबर महमंद भजि ॥
फिरि सज्यो सेन असुचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअष्परी ॥ सज्जिय सेंत संतं सुरतानं । दस दिसि धर दिन्ने फुरमानं ॥
रुम्म हरेव परेव परारिव । भर भंभर भष्षर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकंद कसकंद समानं । कछक बलोच सकी मकरानं ॥
कंदल वास अधम्म इस्वासं । रोही सोह उजब्बक रासं ॥ छं० ॥ ३ ॥
षूनकार ऐराक षंधारं । साहबुदीन मिले दल सारं ॥
धुम्मर वृन्न सिरै तुछ रोमं । जांति अनंत गिनै कुन भोमं ॥ छं० ॥ ४ ॥
घोरमुहा केइ सुप्पर कंनं । चष्प कुरूर मुषं रत वंनं ॥
इन सर कंध विधाह मंजन्निं । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमानं ॥
छं० ॥ ५ ॥

जानै धीर अनी बथ मंलं । जानि गिरव्वर सिष्षर चल्लं ॥
तानै सिनि गिनि झोर विभारं । गोंन चढं जिन टंक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

बंधे द्वो द्वो तोन जुआनं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं ॥
साबद बेधिय लाघव सारं। पंष हनै षह दिष्ट प्रहारं ॥ छं० ॥ ७ ॥
टारैं अनी अनी साइतं। मुंठि अभूल रमै चित किक्कं ॥
मंद अहार सबै फल आसं। पारसि मभ्भ विवानि प्रहासं ॥ छं० ॥ ८ ॥
करै रगब्ब सेरुब्बर वानं। जानि कि ब्रच्छ विहंग बुगानं ॥
बंधिय जूसन सारषि गातं। जानि जुरी नव नाथ जमातं ॥
छं० ॥ ९ ॥
सजि पष्षर लष्षर है साजं। पंषधरी बर उड्डन काजं ॥
गज घुंमर धज नेजर बानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं ॥ छं० ॥ १० ॥
करिय टमंक चल्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद मजादं ॥
तर भंगर गिरि पब्बर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं ॥ छं० ॥ ११ ॥
धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं ॥
है गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि हल्लिय सुविहानं ॥
छं० ॥ १२ ॥

वरन वरन की व्यूहवद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त ॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूह रचि धाइय ॥
अष्ट सेन रचि अग्र। ईष्ट करि सेन बनाइय ॥
एक लष्य सारद्ध। सुभर असवारति साजं ॥
दंती पंति विसाल। अग्ग सज्जे अगिबाजं ॥
पावस्स थान मन्नौं प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय ॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय ॥
छं० ॥ १३ ॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा ॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चारु ॥
कै भुभझहु बुभभह सपरि। कै निकरौ धम्म दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामंतों का परस्पर सलाह और बादविवाद करना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
बड़गुज्जर रा राम । राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरंग सो सीस । बीर लोकिग असमानं ॥
कित्ति मुकति भर सुभर । बीर बीरं बिरुझानं ॥
कूरंभ राव पज्जून दे । गयौ इंछ सामंत बर ॥
तम प्रषै मरन दीजै नहीं । मरहु तुम्ह जिन पर सु धर ॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनिय मंत कूरंभ । मती जानहि सु मरन बर ॥
जीवन मत आनंत । सामध्रमजीइ भ्रम्म नर ॥
हम बीरा रस धज्ज । जोग जीतनं सिर बंधी ॥
हम अभंज अरि भंज । मंत आनी जस संधी ॥
रुक्यौ हंस पंजर सु पच । सो पंजर भंजहिति भिर ॥
जानिग्रै जगत तनु तिनुक वर । अरि बंधन बंधेति फिरि ॥ छं० ॥ १६ ॥
सुबर बीर सामंत । मन्न लग्गे विरुझानं ॥
रा चामंड जैतसी । राम बड़गुज्जर दानं ॥
उदिगबाह पम्मार । कन्क कूरंभ पजूनं ॥
षीची रा परसंग । चंद पुंडीर स कन्हं ॥
महनंग मेर मोरी मनह । दोज बीर उप्परि सलष ॥
देवकन कुंअर अल्हन सुबर । लषिय सोभ भुज बर विलष ॥
छं० ॥ १७ ॥

सामंतों का भगवती का ध्यान करना ।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत रह । उदिग बाह पम्मार ॥
मात बीर अस्तुति करै । सस सु मगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय । अंब ऐक बंधै पालि ॥
तेमन संत पयान किय । इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हांसी के किले में स्थित सामंतों के नाम और उनका वर्णन ।

कवित्त ॥ निड्डुर बर हरसिंघ। बीर भींहा भर रूपं॥
बरसिंहह हरसिंघ। गरुअ गोयंद अनूपं॥
राज गुरू रा राम। नक्री बंभन रस बीरं॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। गौर सग्गर रनधीरं॥
चालुक्क बीर सारंगदे। दई देव दुज्जन दहन॥
सुलतान सेन संमुह मिलै। गात जु हांसीपुर गहन॥ छं०॥ २०॥

चौपाई॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कीनी। बीय सूर सम्हैं अपु लीनी॥
चक्की चवसठि जोगिन्दिकारी। दिसि दच्छिन उर सम्हौ भारी॥
छं०॥ २१॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त॥ उदिग गयौ निक्करै। सुतौ मैंरनह तें डरयौ॥
अमर सूर निक्करै। सु फुनि अलँगे उत्तरयौ॥
चावंड रा निक्करे। सुहड सांवला सहित्तौ॥
गोयँद रा गहिलौत। सु फुनि निक्करै विगुत्तौ॥
सापुलौ सूर भोंहा सुतन। कल कथ्था भारथ करै॥
इत्तने राव गए निक्करे। देवराव नौं निक्करै॥ छं०॥ २२॥
ए सामंत अभंग। मेर धुअ मंडल नामं॥
सेस सीस रवि चंद। सु भुम्मि मंडल अभिरामं॥
एउ टरें कोउ बेर। जोग जुग अंतर साथी॥
अटल एक सामंत। जुद्ध जोगा रस पाथी॥
दैवान देव गति अलघ है। नन गुमान कोइ कर सकै॥
एकैक मत्त चूकै सबै। ज्त्ति कोइ गाइ न सकै॥ छं०॥ २३॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक्क म्रग हत्यौ। सीय लिय रावन चुक्यौ॥
हनुअ बत्त नारद। भरथ चुक्कवि सर मुक्कयौ॥

विक्रम जीव जतन्न । कग्ग आमिष मुष मंडिय ॥
इंद्र अहल्ल्या काज । सहस भंग कांया मंडिय ॥
नल राय दमंती कारनें । और नेम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्कौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय बग्गरी का वचन ।

सांहि मलिक साहाब । दीन जिहि द्वारें बंदिय ॥
जेन द्वार निक्करी । जेन निक्करैं न कंदिय ॥
सिर तुरक भार पड़िहु । सहित धर जाहु सरीरह ॥
हुं सभीछ पहुचेंन । तनों मिकलंक सुरीरह ॥
सांषुलौ सूर सामित्त छल । देवराव कटि बटि मरै ॥
ता भष्यि पुत्त बापह तनौ । असें द्वार होइ निक्करै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का बग्गरीराव के बचनों का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयंद । सत्त सामंतन छुट्यौ ॥
बर षीची अचलस । धार धारंह तन तुट्यौ ॥
सत छुट्यौ उद्दिग्ग । मरन डर ड्र्यौ अबाहिय ॥
सत छुट्टत नरसिंघ । लग उत्तरि पति नांहिय ॥
मुक्यो न सत्त कमधज्ज ने । नाम बीर कल्हन न्रपति ॥
बरि कनकरावें परसंग भरें । दीपंतन रवि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसी गढ़ पर आक्रमण करना ।

मुक्कंत सत तत्तार । तेग बंधी सत बंध्यौ ॥
मिलि आएं सुरतान । सेन गोरी ग्रह संध्यौ ॥
आनि साहि साहाब । मीर हांसीपुर चल्यौ ॥
सुन्यां सूर सामंत । कौंन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छी सुमंति आसत्त बर । बार बार बर बंधियै ॥
असि पच्छ कट्टि बंधौ सुबर । पढ़ि कुरान कंत संधियै ॥ छं० ॥ २७ ॥

*चन्द्रायन ॥ भषे पट्टली मंस सस्त बल मुक्कई। काजी कत्य कुरान धम्म नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ मुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे सीस गयनंग। रेह्यौ रुप्पे रन मांही ॥
सबल सेन सुरतान। परिय पारस परछांही ॥
हक धक्क किलंकार। करै आसुर असमानं ॥
गोर नार जंबूर। बान रुक्के रह भानं ॥
पावैं न मभ्भ पंषी पसर। विसर नह बज्जे सबल ॥
सांषुलौ सुभर जुथौ समर। उदधि मभ्भ लग्गौ अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिघ संग तत्तार ॥
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं बार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ षां ततार गढ़ घेरि। ढोह बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत। भूभ बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन स्तरन धाइय ॥
गयौ बीर पाहार। नांम किन स्तरन साइय ॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ लह। गोपिन रषि अपुब्ब तिया ॥
हथ्थ धनुष आइ बंनर बली। सीय राज्ज अपुसह किया ॥ छं० ॥ ३१ ॥
अस्सपूर तत्तार। भूभ बज्जी मग सुद्धी ॥
ईकल्लो देव क्रंन। बान अर्जुन मग बुद्धी ॥
और सबै सामंत। माहि बिस्सह आजुद्धी ॥
मरन भार उद्दिग। बिहार बीरां रस बंधी ॥
सांषलौ स्तर सारंगदे। तिन बंधी रज्जी जगत ॥
उच्चरै स्तर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

*मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है।

देवराव बग्गरी की बीरता।

अनल मद्धि देवराज। परे पारस दृषि गोरी॥
लहरि सेन बाजंत। धार झारंग झकझीरी॥
बज्जि धार विभ्भार। मार मारह मुष जंपहि॥
सूर मत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि॥
लगि सार धार रुधि छंछ घुटि। सहस सूर उट्ठहि लरन॥
आवट्टि सेन अद्धों सु अंध। अद्ध अद्ध लग्गौ भिरन॥ छं०॥ ३३॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी॥ परे अद्ध अद्धं सु अद्धं अधानं। भिरै अद्ध अद्धं रहै साह यानं॥
अगे दंत पंती चले साह सूरं। प्रलै काल मानो हलै दद्धि पूरं॥
छं०॥ ३४॥

उतै पारसी मीर बोलै करारं। इतै सीस हक्कै धरं मार मारं॥
बहै सूर सूरं लगै धार धारं। मनों भझरी बज्जि देवं सुधारं॥
छं०॥ ३५॥

गहैं दंत दंती उपारंत सूरं। मनों भील कड्डै गिरं कंद मूरं॥
परै पीलवानं निसानं सु पीलं। हन्यौ वज्जि सैलं सन्नष्यं कपीलं॥
छं०॥ ३६॥

बहै षग्ग धारं धरंगे निद्वारं। मनों अग्गि पिंडं कुलालं उतारं॥
उठे स्रोन बिंदं रतं धार लग्गी। मनों लग्गि तिंदू प्रलै काल अग्गी॥
छं०॥ ३७॥

बहै रत्त धारं अपारं सु दीसं। मनों भद्द मभ्भै बहै नद्दि ईसं॥
बिहूं बाह बाहै लगैं सूर सूरं। मनों प्रीति हेतं मिले आय दूरं॥
छं०॥ ३८॥

बहैं जम्मदड्ढं बहै पारधारं। मनों मोष मग्गं किवारं उघारं॥
परै लुथ्थि पथ्थं उंलघ्थंति पानं। मनो मीन कुद्दं जलं तुच्छ मानं॥
छं०॥ ३९॥

रजै ईस सीसं करै रुंडमालं। रमै भूत प्रेतं किलक्कंत नारं॥

ग्रहै अंत लिन्नौ चढ़ै गैन मग्गं । मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं ॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द संदं विहंगं मुनालं । रजै ईस मानं सुरं सत्त पानं ॥
भरै षेचरी पच चौसट्ठि चारी । भ्रवै भोमि श्रोनं पलं पल्लहारी ॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं । परे ह्वार सेनं कहै कोन पारं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना ।

दूहा ॥ देवकन्न सुरलोक बसि । हय नर धर गज भानि ॥
नाग असुर सुर नर सुरभ । बढ़ि भारथ्थ बषान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना ।

कवित्त ॥ जौति समर देवकन । धार पति चट्टिय धारं ॥
निगम ध्रम्म अजमेघ । द्रभ्भ थल दुज्ज अचारं ॥
रथ रंभन भर थक्कि । रवि अक्यौ रथ लोचन ॥
बंध इंद्र सर बंध । मंदु बारा रहि सोचत ॥
शिव बंध सध्य रथ ऊर चढ़ि । भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर ॥
इह करिन काइ करिहैं नहीं । करौ सु को रजपूत धर ॥ छं० ॥ ४४ ॥
देव कन्न बर बीर । धीर भर औरं अहीरं ॥
चौच्यालीस प्रमाण । तुट्टि तन धार सु भीरं ॥
थुत्ति सदेव उच्चार । करै अस्तुति दै तारी ॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि । भिरत कट्ठी कट्टारी ॥
अरि मुष्प गयौ चढ़ि चिंत अरि । तनु धारा हर बिंटयौ ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन । करि कुट्टा जिम कुट्टयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली ।

भुजंगी ॥ पच्यौ देव कन्नं सु भूनिंग जायं । जिनें वास लोकं सयं बंभ पायं ॥
पच्यौ बीर मारू नवं कोट रायं । जिनें जूह लग्गे भुजं काम पायं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पऱ्यौ रानि गिरि राव बीरं षताई। जिने षांन जद्दौं ढ़हायौ षताई ॥
पऱ्यौ बीर मोरी उभै बंध सथ्थं। भजे जूह संपं पली हथ्थ बथ्थं ॥
छं० ॥ ४७ ॥

पऱ्यौ लंच भाई सपंचं अभंगं। ढहे जूह बैरी लगै जूह अंगं ॥
पऱ्यौ सांषुला सूर नारेन इंदं। जिन जाम सेन्यौ करी दूरि दंदं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

परे राव कूरंभ पज्जून जायं। जिने लोक में लोक संलोक पायं ॥
पऱ्यौ पंच पंचायनं पुंज राजं। जिन चंपि वैरी कुलिंगंति बाजं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

पऱ्यौ बग्गरी रूप नर रूप नाहं। भगौं जानि मोरी तुटी जू सनाहं॥
पऱ्यौ बैर बाराह वैरी पचारं। जिने सार झारं दुझारं हकारं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पऱ्यौ गुज्जरीराव रघुबंसरायं। हयं अस्ति सस्त्रं किनं कान पायं ॥
पऱ्यौ षग्ग षिची सु मंची नरिंदं। मरंतं रुजी पौमरं कित्ति कंदं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

परे इत्तने सूर भारथ्थ वित्तं। इरे सूर ते वार रिन संकि पत्तं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामंतों का किला न छोड़ना।

दूहा ॥ रा देवंग रहंत रन। सहस एक बर बीर ॥
तामे एक कमंध रहि। तिन संघारिग मीर ॥ छं० ॥ ५३ ॥
बने विरद बको वहै। बंको षान अलील ॥
दस सहस सम मीर बर। तिन लीनो गढ़ कील ॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मद्धि रजपूत सैं। तिन सझौ दरवार ॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार ॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना।

हांसीपुर प्रथिराज पैं। चंद सुपन बरदाइ ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुक्कारिव न्रप आइ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन।

हांसीपुर उच्चार बर। बीट सेन सुलितान॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं करि उप्पर चहुआन ॥छं०॥५७॥

कवित्त॥ उभै दीह गढ़ ओट। सस्त्र बज्जै सु बान अग॥
अग्गबान कम्मान। सार सिंधुर अभंग जग॥
ता पच्छै सामंत अंत कीनौ परमानं॥
नंषि कोट गढ़ ओट। तस्त लग्गे असमानं॥
न्रिप राज अन्यौ आसौ सुन्यौ। सुपनंतर आसी कहिय॥
ढिल्ली न्रपत्ति ढीलौं धरा। ढीली ह्वै अग्गें रहिय॥ छं०॥५८॥
हांसी पुच्छै पहुमि। राय तं काइन भग्गिय॥
मो बभौष पम्मारि। तेभ भू दंड विलग्गिय॥
तिन ए रस उच्चरै। चिया छल अब्ब गमिज्जै॥
जै सिर पड़ै तो जाहु। कज्ज साईं छल किज्जै॥
संहसा परि झुम्झै मांपुलौ। एह अचिज्ज पिष्पन रहिय॥
देवराव सूर षंडे परिग। ता स तुरक्क संग्रहिय॥ छं०॥५९॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना।

दूहा॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने। हांसी आरय वित्त॥
भ्रम दुवारि निक्करि सुभर। देवराव परि पित्त॥ छं०॥६०॥
इह भविष्य चिंतै न्रपति। भयौ करुना चित्त॥
रुद्र बीर अरु हारु रस। ए अपुब्ब कथ कित्त॥ छं०॥६१॥

कवित्त॥ सुनत राज प्रथिराज। बोलि कैमास महाभार॥
तम मंची मंचंग। मंच रष्षन सामंत बर॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ। नट्ठि रष्षि वामह नट्ठी॥
सोच सु नट्ठि सनेह। नट्ठ गुन विद्य अनुट्ठी॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह। मंत उप्पजै सो करौ॥
कैमास मंत मंती सुमत। मति उच्चारन विच्चरौ॥ छं०॥६२॥

दूहा ॥ मंचि मंत कैमास कहि। राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत। कोइ देवान मकार ॥ छं ॥ ६३ ॥ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना।

कवित्त ॥ कहै मंचि कैमास। पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस। बाहि बिन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज। और मिलिहै चिंचंगी ॥
जनु प्रजलंती अग्गि। मंझि घ्रत सिंचि तरंगी ॥
इस मंचि मंच गिर राज दिसि। दिय पची संमर विगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहियं। दिसि हांसी आवन सु गति ॥ छं० ॥ ६४ ॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर चल्यौ। पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन। चषि घर विरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना।

कवित्त ॥ मुक्कि राज दुज दोइ। बेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि। मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी। राव बड़गुज्जर कन्है ॥
षीची राव प्रसंग। चंद पुंडीर महन्न ॥
पज्जून कनक उड्डग्गै पगर। दोऊ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ कन्न कुंअर मोहन सुबर। मिले आय राजान भर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
मिलिग आव गोयंद। नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उड्डिग्ग। विरद सिंगार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम। समर सामंत अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज। दिये आदर बर भारिय ॥
हम कज्ज लज्ज तुम सीस पर। एह बत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति निम्मान मति। भज्जय बत्त चित्त न धरहुं ॥ छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ कहिय सूर राजन सुनहु । तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै । तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझा बुझा कर सांत्वना देना।

कवित्त ॥ इक वार सुग्रीव । थिया तारा नन रष्षिय ॥
इक वार पारथ्थ । चीर पंचत चष दिष्षिय ॥
इक वार श्रियपत्ति । ब्रमन अग्गौ धर छंड्डिय ॥
इक वार सुत पंड । भोमि छंड्डिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल । कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान षान मोषन ग्रहन । महनरंभ बंछहु मरन ॥छं०॥६९॥
बोलि राज सामंत । कहिय तुम जुद्धनि अज्जर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । राइ रामह बडगुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह । बोलि पहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ । बोलि बरनं बर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम । जोहानौ आजांन बर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि न्रपति । उदधि जानि हल्लिय गहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना।

कोलाहल कलकलिय । रत्त द्रिग बैयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत । तंत तीसान सद्द दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध । राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत । होइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि । करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि । मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि।

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढ़ि । अति आतुर बर बीर ॥
बर प्रधान घावास बर । इह सह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सीय काज ॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि । मानो कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥

रगतैत नैंन भ्रकुटी कराल । मानो कि ईस चयनेच झाल ॥
बंकुरिय मुछ लगि भोंह आनि । मानो कि चंद बिय किरन बानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥

चिहुफेर सूर बिच चाहुआन । मानो निषच परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अँग अंग थान । मानो कि मुकुर प्रतिब्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

करि कैरी अग्ग रज रजत दंत । मानो कि जलद पँग बग्ग पंति ॥
उभभारि सुंड गज लेहि बोर । मानो कि व्यंब अहि मरुत मौर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

मद झरहि पीट बरषंत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मचत कीच हयकुलत लार । मानो कि भद्र कद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥

धर स्याम सेत रत्त पीतवंत । मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चंमकंति अनिय दांमिनि समान । बाजंत वज्ज घनघोर बान ॥
छं० ॥ ७८ ॥

उच्चरहि छंद कवि मोर सोर । पप्पीह कीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घुंट्र सादुरनि नद्द । मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥

दिसि विदिसि धुंध मंडियग भानि । तिभ्रंम इंद्र बिय इंद्र जानि ॥
बरषंत धार चढ़ि व्योम मंत । तिन उड़िय रेन बिच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

तिन कलहि पंथि पावै न ठौर। उप्पमा कौन जंपौस और ॥
कलमलिग्य नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार ॥
छं० ॥ ८१ ॥
रथ घरहि सूर अप अप्प मान। मानो हयग्ग कुलटा मिलान ॥
सिर लग्गि व्योम हय घरहि राज। मानो कि कपिय गिरि द्रोन काज॥
छं० ॥ ८२ ॥
पत्तौ जु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान ॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा ॥ चव्यौ राज प्रथिराज बर। सुनि चित्रंगी भीर ॥
बर हांसी सामंत सह। बैठि घाल बर बीर ॥ छं० ॥ ८४ ॥
कवित्त ॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ ॥
रन रत्तौ रन सु। धम्म आधम्म विरत्तौ ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ ॥
कूंच कूंच उप्पार। दीह जौ पंच सु जत्तौ ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत ॥
आवाज बढ़ी तब मीर बर। सेन संझ हांसी बिरत ॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचतेही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पर्यौ। मेर लज्जि कित्ति सु धारी ॥
सबर सत्त जंपन सु। वीर कित्ति मम बर चारी ॥
ब्रह्म रूप जौति न सु। ब्रह्म औहुट्ठ सपन्नौ ॥
लघ्यौ रूप तत्तार। रंद भभ्भै वित मन्नौ ॥
लगि ऊक सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस ॥
बर भिरन षान षुरसान दल। बैल समान षोलीति अस ॥
छं० ॥ ८६ ॥
डिट्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन ॥
बंधि फवज्ज सुबीर। बीर उचरंत मंत मन ॥
हरवल षान ततार। करै करवलति षुरेसी ॥

तुंड समर लगि नहीं । आनि बंधी बलं गंसी ॥
मुष रक्क मेलि मारु महन । नाहर राव नरिंद तेन ॥
सांवंग समर दिसि दिसि पिनहः । सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिंपाहगीरी और फुरतीलापन का वर्णन ।

महन रंभ आरंभ । समर बंधीति समर बर ॥
अमर नाम बर अमर । मुंकि सामंत लष भर
पुर हांसी बर पत्त । पूर दच्छिन दच्छिन बर ॥
मिले सूर कर वर करूर । बंधीति सिरी सर ॥
बंधि सनाह विलगे समरं । करि भेरं घाइ अपुब्ब भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय । वज्र मेर बज्जे सुभर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चिचंग । बाज उप्पर बर नंषिय ॥
मनहु कंस सिर वज्र । चिल्ह उप्पर धर पंषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत । हथ्थ किरमाम उभारिय ॥
मनहुं चंद विय व्योम । परिग रारिय चमरारिय ॥
घरि च्यारं धार धारक्क रिय । भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस क्रम । कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और गुज्जर सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ दोज सूर बद्द, उडीरेन जद्द । निसी जानि भद्द, वहै वान सद्द ॥
छं० ॥ ९० ॥
सुकै गज्ज सद्द, वहै धर्म जद्द । सुभै रथ्थ हद्द, नचै वीर बद्द ॥
छं० ॥ ९१ ॥
बजै षग्ग सद्द, घटा बज्जि भद्द । षमंजाल षद्द, प्रलै अग्गि नद्द ॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को. सूर ।

चिमूखी अनङ्ग, बजै घाय दङ्ग । जनौं घट्ट बङ्ग, कहं जोग सङ्ग ॥
छं० ॥ ९३ ॥

मगी मुत्ति हई, घगं खेर घटं । उअं ताप उदं, कवीचंद चंदं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

सुभै रथ्थ हथ्थं, ... । रसं रोस भानी, क्रमं सेन दानी ॥
छं० ॥ ९५ ॥

जकी जोग माया, चितं जोग पाया। ....; .... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

समरसी जी की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष। सिंघ छुट्टा पल काजै ॥
कै तुट्टा बयवाज। बीच फोल्लिंग बिराजै ॥
कै रस संका छुट्टि। इधभि दौन छुट्टि विलुड्डा ॥
लज्ज रवन विषग्गंत। उभै रंकहु आलुड्डा ॥
बर सेन उररि निसुरत्ति षां। दइ दुवाह उप्पर परी ॥
चित्रंगराव रावर समर। सुबर जुद्ध एतौ करी ॥ छं० ॥ ९७ ॥

समरसी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिल्लिग घाइ अघघाइ। समर धायौ जु समर वँध ॥
धार धार तन उघरि। गयौ सुर लोक रंभ कंध ॥
षठ सु पंच अरि ढाहि। पंच मिलि पंच प्रपत्त ॥
दइ दुवाह रन अमर। अमर औ बोलन जत्त ॥
हर हार कंठ आनंद मध। सुति मँग्राम दुभार बन ॥
दुष हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यौं। रह्यो पिष्षि तं चिय नयन ॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम ॥ जु रुप्यौ रन रातल मंत्र अंगी। सु मनौं ससि मंडल भू अधनी॥

---

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। गमा में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

बजि षग्ग उनंगत षंग बजै । घरिआरन के सुर संभ लजै ॥
छं० ॥ ९९ ॥

गज षग्ग उड़ंतह मुत्ति झरै । तिनकी उपमा कविचंद करै ॥
मनि मैं ग्रह रत्ति प्रनार चली । जल जावक नागिनि गौरि हली ॥
छं० ॥ १०० ॥

कढ़ि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी । तिनकी उपमा कविचंद धरी ॥
मुष से सहँते जल धार धसी । निकसी जुड़ एक प्रबाह गसी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

छित रावर भारथ राज धनी । कहि भग्गिय षान ततार अनी ॥
छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल* ॥ षां ततार सुनि वेन नैन सोधं । लष्षे करी वर भग्गा जे भानं ॥
ओरं जिन कोटह सुब्बर । लै दस्तिक कर चुंमि तुंड डड्डी बड्डी कर ॥
षां षुरसान ततारं । भंजि भंजे सुर सुब्भर ॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से ततार खां का धावा करना ।

कवित्त ॥ वरजं नंषि ततार । बाजि षुरतार बज्जि षग ॥
पंच अग्ग सौ मीर । संग धाए पयान मग ॥
जुड़ कथ्थं करि हिंदु । तूल जिम बाय उड़ाइय ॥
मेर लाज पज्जून । सत्त साइर वर थाइय ॥
घरि एक भिंभ बज्जी सकल । बर उप्पटं आवार करि ॥
बिठु करि षान ततार कढ़ि । हिंदु मेछ लहिये अपरि ॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ बर लुथ्थ लुथ्थि ओलुथ्थि पलंथ्थ । नचि प्रेत नाद वीरं ततथ्थि ॥
नारद नद भिस सुनि गंभीर । सारद सिद्ध तिन तत्त बीर ॥
छं० ॥ १०५ ॥

चौसट्ठि घाइ सद्द सूर संचि । पंच पचीस काबंध नंचि ॥

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है । इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की वृत्ति के समान है । दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है । इस से मालूम होता है कि यहां के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है ।

बजि घाइ सद्द सद्दीन हुई। सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सत पंच मुक्कि तरवार कूव। तत्तार गात अरवार हूब ॥
बँधि चाल चाल उच्चाल पाव। षगवाह विहथ्थन सूर लाव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

तन बंधि संग सो लोह कड्डि। मानो कि समुह जल मीन चड्डि ॥
उठि छिंछ रकत तीरंत भाइ। मानो पलास बन फुल्लि नाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

बर बुभ्भि साहि कर वज्र वाय। रुधि पियत भीम सामन्न काय ॥
उतमंग हक्क धर नच्चि चाव। झम वहै षग्ग की विज्ज लाव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ अनुध जुद्ध हिंदू तुरक। भय अनादि जमदूत ॥
इन ततार संमुष अनी। उतै समर अवधूत ॥ छं० ॥ ११० ॥

रसावला ॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी। षग्ग झालं जढ़ी, लोह दूनी कढ़ी॥
छं० ॥ १११ ॥

दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। लथ्थि लुथ्थं बढी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२ ॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी। देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी। ईस देषै नन्नं, पुत्तनं रंजनं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

हूर कट्टै इसं, मान कढ़ी जिसं। .... छं० ॥ ११५ ॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना।

दूहा ॥ षोड़स इक पंचह सुभर। समर परग्गि संग्राम ॥
नव घट्टी अंतर परिग। सुत सोमेस सु ताम ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ मद्धि पहर विप्पहर। समर सामंत जुद्ध मिलि ॥

(१) ए.-भूमि। (२) ए.-जालं।
(३) को. कृ.-पुत्ततं।

नवनि नीच करि नीच । जुड्ड संग्राम सार मिलि ॥
विमुष न भौ फरि बंध । जुड्ड सामंत सूर मिलि ॥
अनी एक करि मेर । धाइ अधि जुड्डि षग्ग षुलि ॥
षुरसांन षान दलै ठेलि बर । चंद्धर सौ चौरंग बजि ॥
थिर भए सूर रथ दिषत पर । कायर चलि जंगम प्रहजि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी ॥ कढे लोह सूरं करूरंति तायं । चलै सस्त्र हथ्थं न चालंत पायं ॥
मिलै हंस हंसं चलै अश्व कैसें । जनों नौधनी नार पिय अग्ग जैसें॥
छं० ॥ ११८ ॥

ननं डोलि चित्तं मरंनंति सूरं । त्रिया कुंभ चितं चलै हथ्थ जूरं ॥
प्रतंग्या प्रमानं समानं न सूरं । मुक्के पंच पंचं ननं दीप दूरं ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्परं टूक सा टूक सथ्थं । कला चंद्र राहे उभै भूप तथ्थं ॥
कलै जिक्कर्यौ बार सन्नाह फुट्टै । तिनंकी उपम्मा कवीचंद जुट्टै ॥
छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लवं व्रत्त जुट्टी । रधी राह भेदं दुहुं अंग फुट्टी ॥
लगे धार धारं दुधारं प्रहारं । बरं कांइरं भास चित्तं विचारं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

करं मीडि दून्नें सिरं धुन्नि जत्ती । मनों आष्पिका जाति पच्छै सुरत्ती॥
सुमिचं कपी जानि लंबालिजायं । उपंमा इनं की ननं भूलि पायं॥
छं० ॥ १२२ ॥

कजी भभ लग्गे असम्मान सीसं । उठे पंच दह दून धावंत दीसं ॥
नहो मानवे दानवे नाग लोयं । कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोयं॥
छं० ॥ १२३ ॥

परे समरं सूर भट्टं ति पंचं । लगे धार धारं भए रंचरंचं ॥
सबै धाव सामंत सूरं प्रकारं । पर्यौ बग्गरी रा चल्यौ धार धारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

भरं राज प्रथिराज पंचास पंचं। गयौ राव चावंड रंजीरि अंचं॥
॥ छं० १२५॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त॥ पर्‍यौ अमर सावास। ग्रिद्ध संमुह उड्डावै॥
बल घट्टै तन घट्टि। किंत्ति घट्टी नर जावै॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गौ॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गौ॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम। गयौ मोह माया सु पथ॥
जग हथ्थ राइ सुर लोक बसि। सत्ती जुग्ग भारथ्थ कथ॥
छं०॥ १२६॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर॥
बर बरु करि झग्गरी। सौ कि रानी पुक्कारी॥
धूप दीप साषा सु। पुहप द्रुहह उच्छारी॥
तन पवित्र भ्रम भ्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह॥
अघ रोकि न्रपति जोवन्न वर। पग्ग मग्ग षुरसान लह॥
छं०॥ १२७॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया॥ जै कित्ती रत्ती उमा। मुगत सुरत्ती पान॥
चाहुआन बल बढ़त बर। बल घट्यौ सुरतान॥
बल घट्यौ सुरतान। सहि भौ पूरन चंद॥
राज न्रपति बियचंद। और बीरं रस मंदं॥
विधि विधान निरमान। षान दिष्षिय तिहि बतहय॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतज्जय॥ छं०॥ १२८॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा॥ जै बड्ढी जै दै सकल। पीलँ तन धरि ढाल॥
बल गौरी बल संग्रहै। ज्यौं चंपै बर काल॥ छं०॥ १२९॥

ज्यों चंपै बर काल गुन । हर चंपै विष कंद ॥
रवि चंपै किरनावली । ज्यों चंपैत नरिंद ॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ बर संभरि चहुआन निवासं । उंब चिंचंग नरिंदह सासं ॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी । मनो चंद बद्दर बिच सारी ॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत बीर शरीर गति । छिति मिछ्छित बर राज ॥
मनहु भूप भूआल कौ । बर बसंत रितराज ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ बर बसंत बर साज । सूर लग्गी चावद्दिसि ॥
रत्त रुधिर समरंग । छित्त राजै अद्दत्त बसि ॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान । चंद बध्यौ उड़गन बर ॥
निस-नछित्र ज्यों प्रात । सेन दिष्यौ जुमंच बर ॥
नर गिरहि भिरहि उठ्ठहि लरत । घट घट्टंति न सुभट घट ॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ । दाहिम्म चावंड थट ॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर । यों सुबरे संमेत ॥
सार धार बर देषियै । सार प्रहारन प्रेत ॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।

कबित्त ॥ गुरज उभ्भ तिय लेग । जोन बिय्र सत्त सुरंगं ॥
छह कमान सर सहस । लोह सौ बीर अभंगं ॥
ए तुट्टै बर अंग । तीन यक्का सुर थानं ॥
अंग अंग भिरमलौ । क्रित्ति सारथी सु आनं ॥
तिहि परत गयौ गोरी त्रिबलि । परत षान चौसट्ठि धर ॥
तिंम जंपि चंद बरदाइ बर । नाम जु जू ए सब विबरि ॥ छं० ॥ १३५ ॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।

त्रिभंगी ॥ वर षांन ततारं, कोरिय डारं, नेह उधारं परिषानं ॥

हंवसी षट बंधं, अंम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
असि बर बर भारी, षात प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गोरी घर काले, शस्त्र न भाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरत्ति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
महनंसिय मेरं, गति धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं, चौसठि थानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥छं०॥१३७॥

उन रंग अहत्तं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि टैनं ।
.... ॥
उड़ि साइक स्तूरं, नभ तक हूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
.... ॥ छं० ॥ १३८ ॥

झलारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पै नग्गं ।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
भारथ्थ मुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कंद पुत्ती, रन पुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन झारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं० ॥ १३९ ॥

भोरी परि लीनं, छित रस भीनं, रन दुहु दीनं, करि हैनं ॥
.... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मरि करि गत्तं, करि हित मत्तं, रन गत्तं ॥
.... छं० ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तनं आहुट्टै, मति षुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सनं पानं, बर फुट्टै ॥
इन स्तूर समानं, देवन जानं, रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहन्नी भग्गा, तन षग लग्गा, जंगति सु जग्गा, प्रति लग्गा ॥
छं० ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान औकूब । षूब मरुफ षिति मारू ॥
षूब बेर तत्तार । षूब मंडी षिति तारू ॥

षूब षान षुरसान । षूब जा भारथ षंडै ॥
षूबर गोरिय सैन । जेन भग्गाफग मंडै ॥
अदिहार सांह गोरी सुबर । सुदिन भाज प्रथिराज बर ॥
तित्तने परे झोरी धरे । सुबर बीर बीरं सु रर ॥ छं० ॥ १४२ ॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा ।

बलि भट्टी महनंग । गरूअ गब्बह गज्जिय धर ॥
इन अरंत सामंत । साहि चब्यौ दिल्लिय पर ॥
जोगिंन पुर जोगिंद । आदि षब्बर चौरंगी ॥
इंद्र जोग जुध इंद्र । इंद्र कल इंद्र अभंगी ॥
नग नग नरिंद नग बर सज्जहि । रजहि सेन सामंत सह ॥
नंषयौ कोट आसी पुरह । सुबर बीर लग्गे मगह ॥ छं० ॥ १४३ ॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना ।

लगे मग्ग सामंत । अंग नंचे चब्बर रन ॥
इक्क मंत आमंत । इक्क देषै धावंत घन ॥
महन मंत आरुंभ । रंभ लग्गा चावहिंसि ॥
एक सस्त्र बरषंत । एक बुरषंत बीर असि ॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुंबं । सुबर बीर षप्पर करन ॥
कल्लंकराव कप्पन विरद । महन रंभ मच्च्यौ सुरन ॥ छं० ॥ १४४ ॥

युद्धस्थल का वांक चित्र दर्शन ।

भुजंगी ॥ महं रंभ आरंभ मारं प्रकारं । नचे रंग भैरू ततत्थे करारं ॥
तहां पत्तयौ तत्त चिचंग राजं । मनों गज्जियं देव देवाधि सांजं ॥
छं० ॥ १४५ ॥

महा मंत मंतं सु बंतं हकारे । मनौं बीर भद्रं सु भद्रं डकारे ॥
झनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी । मनो बीज कोटी कलासी पसारी ॥
छं० ॥ १४६ ॥

दुहुं बाहु बीरं सहस्सं भुंजानं । कहै कौन कब्बी बलं जा प्रमानं ॥

रसं तार तारं जितें तार वग्गं। मनो मानही देव मा देव भग्गे॥
छं०॥ १४७॥

बहै बाह बाहं करारेति तथ्यं। परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं॥
नचै बीर पायं झनक्कंत षग्गं। मनो तार बज्जे सु देवाल अग्गं॥
छं०॥ १४८॥

करें कंस कंसी बजे जानि नैनं। इसे सार सौं सार बज्जै सु घैनं॥
उनंके उनाही गुमानं न भग्गें। करी षान षुरसान षुरसान मग्गें॥
छं०॥ १४९॥

बहै बान कम्मान आवत्त तेजं। लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं। मनो चच्चरी जानि आवत्त नग्गं॥
छं०॥ १५०॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे। मनों लग्गियं च्यार ज्यौं मत्तवारे॥
उभै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै। सहै अंग अंगं दुधारें दुधारै॥
छं०॥ १५१॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै। चक्यौ सूर सूर मध्यान मझारे॥
छं०॥ १५२॥

घोर युद्ध उपस्थित होना।

गाथा॥ मध्यानं बर भानं भ्यानं। तेजाथ हरयो मुष्षं॥
चच्चर सी चवरंगं। उच्चारं सूत्तयो बेनं॥ छं०॥ १५३॥

भुजंगी॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं। नमो डंबऱ्यो भान उम्यौ करूरं॥
दुअं बीर धार सु चौहांन गोरी। मनों षेत षड्डं किसानंत भोरी॥
छं०॥ १५४॥

कहें हक्क बाजी विराजंत लस्से। सुभें दंग लग्गे जु पावक्क प्रस्से॥
दुअं सेन हक्कें विहक्कंत न्यारैं। बलैं जांनि द्वंदं सु बंदी पुकारैं॥
छं०॥ १५५॥

(१) ए.-सुष्षं।

रनं रंग रत्तं विराजै सु भूमी। मनों मंगलं मुत्त की आनि-रूमी॥
उडै हंस हंसं द्रुमं डाल ढालं। मनों नाग मध्यं बरं अग्गि चालं॥
छं० ॥ १५६ ॥

इतौं रत्त अग्गे सुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नंमं देवदत्ते॥
भए नेन ऐसें द्रिगं देव जैसे। .... ॥ छं० ॥ १५७ ॥
परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीनं। महा मंत मंत्ती लगे लोह पीनं॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग बंकी सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चंद। बीर उज्जली सुधारिय॥
सेन चमर सम भिंजि। रही छट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अंग अंगन हत दग्गिय॥
कज्जलन कूट तें उत्तरहि। चिय नंदी संग्राम तिथ॥
चिचंग राय रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ कथ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
विध विधानं निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथ्थां पारथ्थ। समर रावर प्रथिराजं॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बद्ध गिरि राजं॥
जित्ति कित्ति धन भांड सौं। भिरन करन बीरत्त गुर॥
कामंडराइ दाहर तनौ। भारथ्थां लीनी सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजंगी ॥ धरा भ्रम्म भारी सु लीनौ नरिंदं। मनों मेनिका देव जुद्धं सुकंदं॥
कमद्धं हँकारें हकें हाक बज्जी। कहै बीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनक्कंत बानं भनक्कंत पग्गं। मनो बीज के बाल अभ्यास जग्गं॥
दुहूं दीन दीनं चहुव्वान गोरी। हडूडूत षेलंत बालक्क होरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

नियं भ्रम्म देहं धुकं अंग जान्यौ। जिनें मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत कट्टै करै सत्त भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं०॥ १६३॥

उदै इंद कट्टै रबी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं झमक्कं प्रमानं॥
पटे हथ्थ अंरे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं०॥ १६४॥

उडै सद्द बानं विवांनंत रत्तै। तिनं मारुतं सद्दगं मद्द मुक्कै॥
छबी छब्बि रत्तं उडै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं बरष्षै करारी॥
छं०॥ १६५॥

परं नाग नागं हलै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं०॥ १६६॥

युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमठ्ठ सुधि॥
मननि सीस मुक्कयौ। इहैं दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हक्कारै॥
घरि एक भयौ विभ्रमत मन। वहुं रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकथ। राज उट्ठि संग्राम लिय॥छं०॥१६७॥

कवि कृत वीर-भत-मुक्ति वर्णन।

सोइ संग्राम सोइ साम। सोई विश्राम मुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। लाहु अच्छरि रसअंत्ती॥
जु कुछ मुकति तिन भनिय। सार सज्जे नह अंगं॥
ग्रसिय जनं किय अग्गि। जोग जुट्टं घन जंगं॥
विन जोग विरह भारथ्थ तिन। सूर भेद भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंचौ सुबर। गयौ सूर भेदेत्र सोइ॥ छं०॥ १६८॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी॥ चढ़े ज्वान अष्षं नषं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मभ्भं सुरंगं॥

चढ़े कोतरं कोक कोकं पुरानं । रवी तेज भग्गी मची चार पानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

मुदें सूर ससि सरोजं पुहम्मं । गयं मुद्दितं पंच आरह अप्पं ॥
कमोदंत मोदं धरं वै प्रमानं । तहां काइरं सो सदिष्षं तथानं ॥
छं० ॥ १७० ॥

प्रफुल्लंत बीरं चकं चक्क यानं । इकं मुक्कि बंछै इकं सामि पानं ॥
त्रियां कंत बंछै वियोगी सँजोगं । रमं छंद बंछै अछी अच्छ भोगं ॥
छं० ॥ १७१ ॥

भई सिंहरेनी बरं दीह ऐसें । मनो संधि बालं विराजंत जैसें ॥
दुहु सेन बज्जे निसानं दुरत्ते । तहां पंथ पंथी रहे थान जत्ते ॥
छं० ॥ १७२ ॥

दुवं सेन बेमं निबंती प्रकारं । दोऊ बीर छेड़े तजे बाज सारं ॥
बिना नींद पानी बिना अन्न धारं । रहे एक हिंदू सहिद्दान सारं ॥
छं० ॥ १७३ ॥

भषै मेच्छ बाली रनं जे करारे । तके बीर कज्जी बिना अग्गि सारे ॥
भषै मंस चोरं धिगं जा प्रकारं । इसी रेंन बित्ती दुहुं दीन भारं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

उरब्बीति मीरंत वारंति षानं । हसे रंग रंगं रसं बीर पानं ॥
इसी रेन दोऊ गई नट्ठि नट्ठी । गई कांयरं कट्टु सूरंत मिट्ठी ॥
छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ रही रत्ति आरत्ति । तत्त लग्गी परिमानं ॥
जुद्ध जूह सुरतान । मंत्र कीने परिमानं ॥
भान पयानैन छोरै । लोह जिन्नै पीयानं ॥
सार धार निरधार । सार उद्धार समानं ॥
षुरसान षान तत्तार रन । द्विसि रत्ती रत्तीत अप ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन । सुभर बीर वीरंत जप ॥ छं० ॥ १७६ ॥

प्रातःकाल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना ।

दूहा ॥ बर भग्गी जग्गीति निसि । दोऊ दीन परमान ॥
बंचि सिधारे तीसचव । करि निवाज सुरतान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहिं। उघरि सत पच भग्ग ग्रनु ॥
ख ग भंगि सम भमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उड्डगन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
संविधि सुरंग थ्याप्पर घन। रवि रत्तौ मुष दिष्षयौ ॥
भासकर सहस्कर क्रमकर। नवकर कमुद विसष्षयौं ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकासय। वारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अट्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥ छं० ॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुन्नय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥

तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कमोदनि को मत हूरय ॥
बंध जवासुर ग्रीषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात रनी सर हूरय। भंस करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्तुति भाष प्रकारय। तज्जय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हैवर ओघ करं गिर पारय। माहुं देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज अख्रवत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचारय ॥
छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्षिय। भुक्ति स लच्छिय संपन अष्षिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर दोरन गयंद घर ॥
ब्रह्म बिष्णु अंजुल। उदंत आनंद नंद हर ॥
इक चक्र चिहुं दिसि। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कमल पानि सारी अरुन । संसार जियनं जुन ॥
उच्छंग बीर छुच्छव पवन । निरालंभ सनह समुष ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै । करी मित्त दोइ दीन दुष ॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन ।

दूहा ॥ सो जगत मंगी सु कर । कढ्ढे लोह करि छोह ॥
दै दिवान देवत्त गति । हाइ हाइ रवि रोह ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ .... । .... अरिट्ठ गरिट्ठं ॥
चाहुआन सुरतान । बीर भारथ्थ वरिट्ठं ॥
दै दुवाह अति धाह । पग्ग षोलै छिति तोलै ॥
सस्त्र बीर बाजंत । देव देवासुर डोलै ॥
डकनि डहकि जोगनि लसुय । लसै लोह देवर धसै ॥
चामंडराय दाहरतनौ । राज भम्म चित्तं बसै ॥ छं० ॥ १८७ ॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन ।

उत्तू दिसा सामंत । अड उभ्भै दुहुं पासं ॥
रा चामंड जैतसी । सलष चरिवा सुवासं ॥
लोहानौ आजान । बलिय पाँवार सभारिय ॥
दै दिवान दैवत्त । वर्म लैहै अधिकारिय ॥
महनसी मेर पच्छै नृपति । मुगति हथ्थ कट्टी निजरि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त गति । सुबर बीर ठट्टे उसरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

यवन सैनिकों का उत्साह ।

* सौ मीरन संग्रमंति । वज्जि नीसान षेत रहि ॥

---

* मालूम होता है कि या तो यहां के कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है । छन्द १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिएं । तिस के बाद मृतकों की संख्या या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए । परन्तु छन्दों के खंडित होने के सिवाय हमारे बिचार से छन्दों की लौट फेर भी हुआ है । छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उधर बेसिलसिले पड़ता है । इसलिये संभव है बज कि प्राचीन समय में खुले पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो । परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतियां समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है । पाठक स्वयं विचार कर देखें ।

हय गय नर विच्छुरै। रुद्र सौ बीर बीर नंह ॥
निस वर वर उभ्भरहि। भूत प्रेतम उच्छर्ष सिर ॥
बज्जि घाव हक्के। विमाव चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद्द नद्द सद्द सुभर। बीरभद्र आनंद भर ॥
इहि भंति निसी सुर सुंदरी। भर हर हर बज्यौ सुभर॥छं०॥१८९॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन।

भय बिभात लगि गात। रत्त रत्तं रन मत्यौं ॥
हिंदवान तुरकान। जुद्ध अंतर अंगत्यौं ॥
अगति मग्ग पाइन। सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ ॥
अश्वमेद बहु दान सस्त्र। सम एक न षुल्ल्यौ ॥
स्वामित्त धरम कीनौ जु इम। मन उछाह अच्छे रहसि ॥
ना करी कोइ करिहै न को। करौ सु कौ रवि चक्र गसि॥छं०॥१९०॥

दूहा ॥ चक्र चरित सोमंत ग्रसि। निज निवर्त नग नाम ॥
चाहुआन सुरतान सौं। बज्जि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम।

कवित्त ॥ गयौ षान तत्तार। पऱ्यौ षुर सानुति षानं ॥
पऱ्यौ हिंदु बर रूप। भीम परि पर रन भानं ॥
पऱ्यौ भट्टि बलिभद्र। मान परिमान न मुक्यौ ॥
पऱ्यौ जंगलीराव। बीर इहिम दल ढुक्यौ ॥
अजमेर जोध जोधा अरिग। पर किरहत बन बीर बंध ॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय। चढ़ि अच्छरि मोरै सु कंध ॥
छं० ॥ १९२ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ। ग्रब्ब सु नंध्यौ साहि ॥
लज्ज ग्रब्ब भै लै दुऱ्यौ। जस सु जोति बल नांहि ॥छं०॥१९३॥

खेतझरना होना और लाशों का उठवाया जाना।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार कुव्योति समर बर ॥
बजि निसान आहत्त । जीति पुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामंत । बीस छिप डंगह प्रमानं ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समानं ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा फित्ति जही फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि पुरसान दल । छोड़ि फकीर छुट्टि ति फिरि ॥
छं० ॥ १९४ ॥

युद्ध में मृत वीरों के नाम ।

परिग षान षावास । गौर हांसीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर बिभारी ॥
पऱ्यौ कहै चंदेल । पऱ्यौ राजा नव भानं ॥
परि मोरी महनंग । जंग जीते जुग जानं ॥
पौंवार परिग पूरन पहु । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर बलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १९५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्थ बर । न्रिप सम करि जुध ताम ॥
ढूंढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ जंगलवै बर मग्गि । भग्गि तत्तार संपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बंध्रव सलषन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ आहर नाहर हर ॥
कन्ह पुत्त दुति बंधि । चंद रघुबंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
बीरम्म बीर माल्हन परिग । मल्हनि वास विरास मन ॥
छं० ॥ १९७ ॥

हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन ।

हांसीपुर दिन सत्त । तीय वासर अग्या बर ॥
घाव बांधि भर सुभर । ठेलि दुस्मन प्रवाह पर ॥
वार सोम सत्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रष्षन्नि अरि भंजि। मिलिय रावल रन रत्तो॥
सामंत रष्षि भारथ्थ जिति। गवन रष्षि मन राज अंग॥
बर मिलि समंद सज्जिंजौ सुष्ष व जलन देषि एकह सुमग॥
छं०॥ १९८॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना।

जीति थान तत्तार। धारि हांसीपुर नीरं॥
जीति समर भिरि समर। रुधिर रत लत्त सरीरं॥
प्रथु सामत प्रथिराज। सुने सामंत सु कथ्थं॥
जथ्थ कथ्थ अरि करिय। डोलि मन सूर सु रथ्थं॥
छलि कै अमंत मुकै न बल। तजि हांसी सम्हौ भिरिय॥
रुंधयौ चक्र जुग्गिनि सु बर। बीर बीय संमुह फिरिय॥
छं०॥ १९९॥

दूहा॥ ढिल्ली सह सामंत सथ। अमर सुकृत ढिग थान॥
समरसिंघ रावर सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं०॥ २००॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना।

भावभगति बहु विद्धि करि। हमं लज्जा तुम भीर॥
इक्क अरी कमधज्ज गिनि। इक सहाबदी मीर॥ छं०॥ २०१॥

बालुका सद्यौ समर। और विध्वंस्यौ जग्ग॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत। फिरि उन्हाई लग्गि॥ छं०॥ २०२॥

दिवस पंच मनुहारि करि। पहुँचायौ चित्रंग॥
बीस अश्व गज पंच सजि। पहुँचाए संग॥ छं०॥ २०३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ५२॥

अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ।

दूहा ॥ सुकं सुकी सुक संभरिय । बालुक कुरंभ जुद्ध ॥
कोट महुव्वा सांह दल । कहौ आदि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै । हारि कूरंभ षग भद्विय ॥
सब लुट्टे गजबाजि । हेम मानिक नग वट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह । हारि कूरंभ सम लद्धिय ॥
सह आलूक कमंध । उभय पज्जून सकिद्धिय ॥
अध्यैव ताम तत्तार बर । करौ कूंच उत्तं गहर ॥
महुवर दिसान चंपै धरा । वीर पजून सु बंधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर । कोट महुवा थान ॥
षा निसुरति हमौ सुर्तगल कर कीनौ अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥
कियो कूंच गोरीनृपति । मुहर महुवा थान ॥
षां षुरसान षुरेस सौ । षाइल लष्ष प्रमान ॥ छं० ॥ ४ ॥

शाही सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ सांह सुरतान । षान षोयौ फिर ढूंढन ॥
सम कूरंभ चहुआन । धरा मोह अब मंडि रन ॥
लष्ष एक असवार । सहै बानह सम बारन ॥
पाइक अयुत चिपंच । संग तत्तार सु धारन ॥

बलिराइ जेम दानध बलिय। तेम प्रकारन भुड्डि मढ़ ॥
उड़गन कि चंद तत्तार दल। इम घेर्‍यौ मोहब्ब गढ़ ॥ छं० ॥ ५ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ रष्पन गढ़ थाप्यौ नृपति। बहु दिन बीर पजून ॥
पठये इत्त सु राज पै। निढ्ढुर मन साऊन ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूत कहिय दारुन षबर। फौज साह सुरतान ॥
पारस राका दल प्रबल। कोट मह्वा थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल जरंन सुरतान ॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध मह्वा थान ॥ छं० ॥ ८ ॥
फौज दिष्षि चहुआन की। सब सूर रनधीर ॥
मद्धि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराव हमीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

नेज बाज नीसान सजि। चढ़े सकल सामंत ॥
कूरंभ बिन को अंग में। अनी लष्ष हैमंत ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय ॥
को ढुंढारह राइ। पग्गे मग्गह संभारिय ॥
मोसें बोलि नरिंद। सैन दै नेन मिलाइय ॥
ए कूरंभ नरिंद। साह जेम राह सु आहिय ॥
बोलयो जाम जद्दौं सुबर। चिंच गो रावर सुभर ॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर नरको रबिचक्क तर ॥छं०॥११॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। षेदि कढ्ढौ तत्तारिय ॥
बहु पुच कै वार। जुद्ध अरियन सिर भारिय ॥

(१०) कृ. को.-'सेन दे नेनानि लाहय'।

इन भेहरा पै जाय। षेदि कढ्यौ चालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ। लियौ छोंगा चालुक्की ॥
इन नंषि पीदि आबू सिषर। अजा बीर अजपाल हित ॥
कैवरा बीर कंवर हतिग। करै बीर आनंद प्रिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पंगानों बीर। बाद षोषंद पहारिय ॥
इन देवगिरि जुरिग। बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन जालौरय जाय। दई भाटी महनंसिय ॥
बंधि जोध अजमेर। बैर भंज्यौ मलअसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय। ढिल्लिय धर अविचल धरा ॥
संग्राम सूर कूरंम ढिग। नको बीर बीरंमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर। समर मिलिग पज्जून ॥
बर हांसी हिसार दिय। गढ़ दीने दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥
कवित्त ॥ दीने छत्र सुजीक। सत्त नीसान चोर बर ॥
रतन हेम हय गय। समूह आदर अनंत भर ॥
सुधर बीर अति धीर। कम्ह कल्हन बुल्लायौ ॥
अप्पि मह्लवा लाज। साजि बर बीर चढ़ायौ ॥
सुरतान साह गौरी चढ़िग। पर तत्तार अगिवान करि ॥
उतऱ्यौं सिंधु अवांर बिज। मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सगुन सरम्भर सुभ असुभ। जित्ता जहर मुनिंद ॥
चल साह कारन कवन। नइ पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर बीर। तोन बंध्यौ गोरीय भुकि ॥
दैवकाल उपज्यौ। छिति छचीन रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह। हम सा हिंदु सामंता ॥
ज्यौ रोजा सों भुकि। बहय छंडै जुधवंता ॥

कूरंभ सकुल, बरबंधि कैं । हौं, बंधन गोरी कौं ॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा । सुबर बीर कित्ती धरौं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा ॥ षरिग सहाब भंजन धर । दिल्ली दछिन छंडि ॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै । आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी षग जोरी । पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥ छं० ॥ १९ ॥

भिरै बीर बीरं, बजे सद्द तीरं । भजे कोटि धारी, बयन्नं करारी ॥ छं० ॥ २० ॥

करं कुंत हल्लै, महाबीर बुल्लै । मलैसिंह हथ्थं, दियै कोटि सथ्थं ॥ छं० ॥ २१ ॥

रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं । स्वयं बीर बीरं, महामत्त तीरं ॥ छं० ॥ २२ ॥

जिनै मुष्ष पानी, भुकै षग्ग बानी । उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त भावै ॥ छं० ॥ २३ ॥

छुटै बीर बीरं, रुलंते सरीरं । कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा ॥ भौर सु भंजत बीर बर । ज्यों भान मध्यानं ॥
जे कूरंभ करै सु भर । देवै मनुष्य प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥

धंनि सुकत पज्जून कौ । मलयसिंह बलिभद्र ॥
स्वामि सद्द बंधन हसहि । कट्टन भीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥

त्रिभंगी ॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर भाले, भमै भालें ॥
षानं मुलतानं, ले षुरसानं, जन तुरकानं, भय भानं ॥
गजदंत सु कट्टै दै पगै चट्टै, कंध उकट्टै, भिल्लानं ॥

अथ प्रजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते

(चौवनवां समय ।)

और सामतों को महुवा में छोड़ कर पज्जून का नागौर जाना ।

कवित्त ॥ रष्षे कन्ह नरिंद । मलष रष्षे बड़ गुज्जर ॥
उद्दिग बाह पंगार । साह साईं भुज पंजर ॥
रष्य निड्डुर बीर । बीर रष्षे सु पवार ॥
किल्हन दे तूंअर । उतंग किन्नन सिर सारं ॥
पज्जून महौवे जोति बर । पुत्र रष्षि बलिभद्र बर ॥
तिय बंध मलसी पल्हसी । सुवर चित्त चिंता सुभर ॥ छं० ॥
दूहा ॥ ए सब रष्षि पजून संग । दै सांई सिर भार ॥
बर नागौर सु रष्षिया । भिन्नन सार प्रहार ॥ छं० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना ।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनी । तजि मौहब महत्त स्रम ॥
उभै हारि सिर धारि [illegible] डि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बढ़िय दुष [illegible] सुष [illegible] छायारु प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन स्रम । प [illegible] बंधो कूरंभ हनि ॥
[illegible] नागौर दिसि । संभरि आषेटक स पुह ॥
पीपल सु थानि आसेर गढ़ । दिसि जुग्गिनिपुर गंम तह ॥
छं० ॥ ३ ॥

धर्म्मायन का गजनी को समाचार दिना ।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा । सुर धर सुभर सु रष्षि ॥
धम्माइन काइथ कुटिल । कागर गोरी लिष्षि ॥ छं० ॥ ४ ॥

री पै राय दूत बर। षान साहि सुरतान ॥
कु कूरंभ-चरिच दिषि। धरं नागौर प्रमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

शाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि ॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्षि फुनि ॥
संभरिवै जहों दिसान। आमेर सु हिंडय ॥
व्याह विनोद सुरंग। नृपति देवास सुमंडिय ॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कढ्ढिहौं ॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु वपु षंडिहौं ॥ छं० ॥ ६ ॥

पद्धरी ॥ लष तीन मीर अवसान सद्धि। चहुआन धरा कामना किद्धि ॥
दस सहस करी मत्त प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि ॥
छं० ॥ ७ ॥

पाइक्क सहस चौसह चित्रच्छ। दह घाव इक्क टारंत स्वछ ॥
साबद्द वेध साइक्क मग्ग। दिष्षेव साइ बंधंत षग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥

पाइक्क साइ बर हने तीर। असि वरहु पंथ कटि बाज बीर ॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस ॥
छं० ॥ ९ ॥

कूरंभ दीसा फुरमान लष्षि। [illegible] ताव [illegible] बैन भष्षि ॥
फुरमान लिष्षि सुरतान बीर। मुक्के सु दूत नागौर तीर ॥ छं० ॥ १० ॥
पज्जून तेगबर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध [illegible] न मथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर ॥
सम सहाब तंमर करन। आयो जोजन तीर ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

कवित्त ॥ हँसि पज्जून नरिंद । कहै सुरतान साह बर ॥
जीव डरं खल्लवै । सो न कूरंभ होहि नर ॥
सो न होहि रघुवंस । तेग छंडैं मरनं डर ॥
हम छंडैं जब [illegible] । सूर उग्गै न दीह पर ॥
चल्लै न पवन गंगा थकै । गवरि तजै बर ईस बर ॥
पज्जून नाम कूरंभ म[illegible] । [illegible] जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १[illegible]
कहै राज पज्जून । बीर कूरम्भ चेत बर ॥
हम सलाह सुरतान । हम सु रष्षें ढिल्लिय धर ॥
हम रवि मंडल [illegible] । जाम लगि सत्त न छंडैं ॥
षंड षंड धर ढारि । सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिक चिंता न करि । मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर । मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १[illegible]

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कह[illegible]

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जनं पुरह । दिय दुवाह सुरतान ॥
भागि अवर चक्कित सुभर । कूरँभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना ।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान । षान तत्तार बुलायौ ॥
हम सुषान ज[illegible]ौ । जुद्ध [illegible]हुआन चलायौ ॥
षोषंद[illegible] [illegible] मारि [illegible]मार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी [illegible] कह पष्षि लित्तौ ॥
पज्जून [illegible] । आय पाय सुरतान परि ॥
कै आ[illegible] [illegible]जि[illegible] कै स साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ।

इधर नागौर में किलेबन्दी होना ।

दूहा ॥ ए[illegible] कन्ह बालभद्र बर । मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहिं साह सनमुह लरन । लज्जि ह कँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
वर पज्जून बरज्जिया । नृपतिन ढिल्ली ढाइ ॥

लगे लोह अंग परे जंग षानं। पन्यौ षान षुरसान तेह [illegible]त पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंष्यौ सु [illegible] मलै सिंह कूरंभ॥
[illegible]स हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तन तरंग कूरंभ [illegible] ५२

इनि जित्तें अग्गै सु अरि। बर बंध्यौ सुरतान॥
दुअ सु लष्य को अंग मै। धनि कूरंभ प्रमान॥ छं० ॥ ५३ ॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त ॥ पूव षान मारुफ। पूव दल मलिय मलैसी॥
बंध्यौ गोरी साहि। भांति करिजैं जु प्रलै सी॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं॥
सुबर भाग प्रथिराज। बीर कूरम्भ सु गावैं॥
लै गयौ साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया॥
कूरंभ वंस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ षान तत्तार। साहि गहि [illegible]ट पयट्ठ॥
सुरतानह सब से[illegible] संकि [illegible]॥
छंडि करी सें सत्त[illegible] [illegible] बर॥
हसम हेम डेरा। जर[illegible] [illegible]जर॥
हुअ प्रात आइ पज्जून [illegible]र। [illegible] [illegible]म रैवर गिरद॥
कविचंद कित्ति उज्ज[illegible] [illegible]। राका [illegible]सि चंदह सरद॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरँभ धारिय॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकारिय॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु॥

[1]वार वार प्रौढा प्रमान । दंड करि घर जावहु ॥
कीरान कारीम कम्म तजि । हय सु पैज पीरान क्रिय ॥
कूरंभ समह मुर षित्र बसि । षोय लज्ज षुरसान किय ॥छं०॥५६॥

दूहा ॥ दंड मंडि सुरतान सिर । छंडि दयौ चहुआन ॥
औ सु धम हिंदवान कुल । करिग चंद बखान ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षज्जून कछावाहा पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौं प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५४ ॥
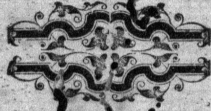
(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और " दंड " शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्राति में पाठभेद नहीं है ।